PART-**1**

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता- आर्यभट्ट

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India)

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है । रामायण और महाभारत काल से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक अनेक भारतीय विद्वानों ने विभिन्न भौगोलिक पक्षों का वर्णन अपने-अपने ग्रंथों में किया है। प्राचीन काल में भूगोल नाम का कोई अलग विषय नहीं था किन्तु धरातलीय तथा आकाशीय पिण्डों से सम्बंधित अध्ययन क्षेत्रशास्त्र के रूप में प्रचलित था। इसीलिए भूगोल और खगोल को एक-दूसरे से सम्बद्ध माना जाता था। गणितीय भूगोल और खगोलीय भूगोल प्राचीन भूगोल के प्रमुख पक्ष थे। इसके साथ ही भौतिक तथा मानवीय तथ्यों के प्रादेशिक वर्णन भी इसके अन्तर्गत समाहित होते थे। प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वान निम्नांकित हैं जिन्होंने अपने ग्रंथों में भूगोल के विभिन्न पक्षों की व्याख्या और वर्णन किये हैं।

(2) आर्यभट्ट

प्राचीन भारत (चौथी शताब्दी) के प्रसिद्ध खगोल विज्ञानी आर्यभट्ट का जन्म पाटलिपुत्र में हुआ था। आर्यभट्ट ने पृथ्वी की आकृति गोलाभीय (spherical) बताया और पृथ्वी के व्यास और परिधि का परिकलन किया। उन्होंने पृथ्वी की परिधि लगभग 24835 मील बताया था जो वर्तमान आकलन (24901 मील) के लगभग बराबर है। उन्होंने सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण का कारण सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच बदलती स्थितियों को बताया और प्रतिपादित किया कि पूर्णिमा की रात में चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया पड़ने पर चन्द्रग्रहण दिखायी पड़ता है। आर्यभट्ट की प्रमुख कृति 'आर्यभट्टीयम्' है। सर्वप्रथम उन्होंने ही खोज की थी कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अपनी धुरी पर धूमती है।